❁ 28 सितम्बर 2014 (21-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] सेकण्ड का निश्चय अर्थात् नज़र से निहाल। सेकण्ड नम्बर श्रेष्ठ बोल से निहाल, तीसरा नम्बर सौदागर से सौदे के मुआफिक मूल्य को बार-बार जानने के बाद मरजीवे बने, चौथा नम्बर जरा सा प्राप्ति के, स्नेह के, सम्पर्क के, परिवर्तन के आधार पर अभी संशय अभी निश्चय। तो बापदादा आज हर बच्चे की इन बातों को देखते हुए रूह-रिहान कर रहे थे। इस मरजीवा जीवन में सदा निर्विघ्न वा सदा तीव्र पुरूषार्थी, सदा प्राप्ति द्वारा अनुभवी मूर्त वा पुरूषार्थी जीवन वा चढती कला वा उतरती कला, इस रफ्तार में चलने वाली जीवन – इस तीनों प्रकार की जीवन का आधार रूप, रेखा और वेला पर है।

2] जन्मते ही सर्व प्रापर्टी के अधिकारी होते हैं, ऐसे हर स्वरूप के अनुभूति का अधिकार अनुभव करेंगे। जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार समाया हुआ है ऐसे नम्बर वन अर्थात् बाप समान समीप आत्मायें वा नम्बर वन वेला वाली आत्मायें सर्व स्वरूप की प्राप्ति के खज़ाने के आते ही अनुभवी होंगे। ऐसे अनुभव करते हैं कि यही स्वरूप निजी स्वरूप है। सुख का अनुभव होता, शान्ति का नहीं वा शान्ति का होता सुख का नहीं, शक्ति का नहीं, यह फर्स्ट नम्बर की वेला का अनुभव नहीं। सेकेण्ड मे वर्से के अधिकारी - **यह है वेला और स्वरूप।**

3] समय का मूल्य रखना अर्थात् अपना मूल्य रखना। समय की पहचान है ही, लेकिन पहचान स्वरूप होकर चलना- यह है अटेन्शन की बात।

4] वानप्रस्थ में सिर्फ एक ही कार्य रह जाता- बाप की याद और सेवा, सोओ तो भी याद और सेवा- इसी को कहा जाता है वानप्रस्थ।

5] ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझवाला। गृहस्थी होंगे तो उतरती कला में जायेंगे, ट्रस्टी होंगे तो चढ़ती कला में जायेंगे।

6] संगमयुग का श्रेष्ठ शान है सन्तुष्टमणि बनना वा सन्तोषी होकर रहना। इस शान में रहने वाली आत्मा परेशान नहीं हो सकती। संगमयुग पर बापदादा की विशेष देन सन्तुष्टता है।

✺ योग-

1] इस संगम का एक सेकेण्ह भी क्या नहीं कर सकता। एक सेकेण्ड में यहाँ से चारों धाम का अनुभव करके आ सकते हो।

2] फ्रैण्डस् का सम्बन्ध याद रहे तो तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से खेलूं यह अभ्यास सहज हो जायेगा।

✺ धारणा-

1] निश्चय बुद्धि बनना वा निश्च करना है, यह संकल्प मात्र भी नहीं होगा। जन्मते ही नेचुरल निश्चय बुद्धि की रेखा होगी। कैसे वा ऐसे वे विस्तार में नहीं जायेंगे, हैं ही इसमें ऐसे और वैसे का प्रश्न नहीं उठता। ऐसे पूरे जीवन के अटूट निश्चय की रेखा अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट दिखाई देगी। निश्चय की रेखा की लाइन अखण्ड होगी, बीच-बीच में खण्डित नहीं होगी। ऐसी रेखा वाले के मस्तक में अर्थात् स्मृति में सदा विजय का तिलक नज़र आयेगा। ऐसी रेखा वाले, जैसे ब्राह्मणों का भविष्य श्रीकृष्ण रूप में जन्म से ही ताजधारी दिखाया है, ऐसे जन्मते ही सेवा की जिम्मेवारी के ताजधारी होगे, सदा ज्ञान रत्नों से खेलने वाले होंगे। सदा याद और खुशी के झूले में झूलते हुए जीवन बिताने वाले होंगे। सदा हर कर्म में वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे। हर दिनचर्या में अपने साथ सर्व सम्बन्धों से समीप

...2

और साकार रूप में साथ का अनुभव करेंगे। स्वत: योगी और सहजयोगी होंगे। **यह है नम्बर वन रूप, रेखा और बेला वालों की निशानी।** अब अपने को चेक करो- पहले नम्बर की रूप, रेखा और वेला वाले कितने होंगे? 8 वा 108? आप सब कहाँ हो? अभी भी चेन्ज कर सकते हो। लास्ट सो फास्ट जा सकते हैं। अभी भी परिवर्तन की मार्जिन है। अभी 'टू लेट' का बोर्ड नहीं लगा है। गुप्त पुरूषार्थी दिन रात एक दृढ संकल्प के पुरूषार्थी हाई जम्प दे सकते हैं इसलिए फिर भी अपने भाग्य को नम्बरवन बनाने के पुरूषार्थ की लाटरी डालो तो नम्बर निकल आयेगा। समझा क्या करना है ! लास्ट चान्स है इसलिए बीती सो बीती करो, भविष्य को श्रेष्ठ बनाओ इसलिए बापदादा फिर भी सबको चान्स दे रहे हैं, फिर उल्हना नहीं देना- हम कर सकते थे लेकिन किया नहीं। समय नहीं मिला, सरकमस्टान्सेज़ नहीं थे, अभी भी रहमदिल बाप के रहम का हाथ सबके ऊपर है इसलिए अपने ऊपर भी रहमदिल बनो।

2] अवतार अवतरित होते ही हैं धर्म की स्थापना के लिए- तो आप सभी भी अवतरित अर्थात् अवतार हो तो क्या याद रहता है? यही धर्म स्थापन करने का कार्य। स्वयं धर्म आत्मा बन धर्म स्थापन करने के कार्य में सदा रहने वाले, तो शक्ति अवतार हो ना ! हर एक शक्ति, अवतार है। पाण्डव भी शक्तिरूप हैं। एक सर्वशक्तिमान है बाकी सब शक्तियाँ हैं, तो सब शक्ति अवतार हैं- सिर्फ यह भी स्मृति रहे तो कितनी मीठी जीवन का अनुभव करेंगे।

3] त्रिकालदर्शी अपने को नहीं जान सकते जो कहते हो क्या करूँ ! अब इसमें टाइम नहीं गँवाना- होना तो चाहिए, चाहते हैं कर नहीं पाते, यह बचपन की बातों का खेल अब समाप्त। इसका ही अब समाप्ति समारोह मनाओ।

4] गृहस्थी समझने से क्या, क्यों शुरू हो जाता, ट्रस्टी समझेंगे तो फुलस्टाप आ जाता, फुलस्टाप अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव।

5] अगर निश्चय हो कि कल्याणकारी समय है, हर बात में कल्याण है, तो कितने भी तूफान क्यों न आयें लेकिन हिला नहीं सकते। अब निश्चय के फाउन्डेशन को तीव्र पुरूषार्थ का पानी देकर मजबूत करो तो सदा अंगद के समान रहेंगे।

6] **स्मृति के संस्कार मजबूत करो।** सदा याद रखो कि यह अंगद का यादगार हमारा ही यादगार है तो शक्ति आयेगी।

7] आज अल्पकाल की प्राप्ति भी हिम्मत और हुल्लास में लाती है तो यह तो सदाकाल की और सर्व प्राप्ति हुई है उन सबकी लिस्ट सामने रखो। जब प्राप्ति अटल, अचल है तो हिम्मत और हुल्लास भी अचल होना चाहिए।

8] जन्म से ही विजय का तिलक लगा हुआ है सिर्फ वह मिट न जाये- यह अटेन्शन रखना है।

✹ सेवा-

1] सदैव नया उमंग, नया हुल्लास और नया प्लैन होना चाहिए। कोई ऐसे सर्विस के साधन बनाओ जिससे कम खर्चा और सफलता ज्यादा हो। अभी बहुत सेवा की मार्जिन है। उसको पूरा करो, हर प्रोग्राम में विशेषता वा नवीनता जरूर हो। सबको अनुभव कराने का प्लैन बनाओ।